उत्तराखंड में वनाग्नि पर प्रभावी नियंत्रण

चर्चा में क्यों?

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री **पुष्कर सिंह धामी ने मुख्य वन संरक्षक (CCF) को अत्यधिक संवेदनशील ज़िलों** में वनाग्नि के विरुद्ध **तत्काल कार्रवाई** करने के निर्देश दिये हैं।

मुख्य बिंदु

- **अग्नि नियंत्रण हेतु नोडल अधिकारियों की नियुक्ति:**
  - **वन विभाग के 10 वरिष्ठ अधिकारियों को ज़िला स्तरीय नोडल अधिकारी** नियुक्त किया गया।
  - उनकी भूमिका बेहतर अग्नि प्रबंधन के लिये ज़िला स्तर पर **संसाधनों और विभागों का समन्वय करना** है।
  - ज़िला स्तर पर **प्रबंधन, नियंत्रण, निगरानी, सहयोग** और **समन्वय को दृढ़ करने** पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।
- **अग्नि-पूर्व मौसम की तैयारियाँ:**
  - उत्तराखंड वन विभाग ने वनों में आग लगने के मौसम से पहले नोडल अधिकारियों की नियुक्ति के लिये एक **कार्यालय आदेश जारी किया है।**
  - नोडल अधिकारी **अग्नि प्रबंधन तैयारियों** और ज़िला स्तरीय नियंत्रण उपायों की समीक्षा करेंगे।
- **अग्नि नियंत्रण में सामुदायिक भागीदारी:**
  - इसके साथ ही, वन अग्नि नियंत्रण एवं प्रबंधन में सामुदायिक भागीदारी बढ़ाने के लिये उत्तराखंड वन विभाग अल्मोड़ा वन प्रभाग के अंतर्गत राज्य के सभी प्रभागों में **'शीतलाखेत' मॉडल को दोहराने के लिये फील्ड कर्मियों, राज्य पर्यावरण प्राधिकरण (SEA)** और वन अग्नि प्रबंधन समितियों के साथ अनुसंधान कर रहा है।
  - **अल्मोड़ा वन प्रभाग** के अंतर्गत विकसित **'शीतलाखेत' मॉडल को** राज्य के सभी प्रभागों में अपनाया जा रहा है।

जंगल की आग (वनाग्नि)

- **वन की आग को झाड़ी या वनस्पति की आग या वनाग्नि** भी कहा जाता है, इसे किसी प्राकृतिक सेटिंग जैसे **जंगल, चरागाह, ब्रशलैंड** या **टुंड्रा में पौधों के किसी भी अनियंत्रित और गैर-निर्धारित दहन या जलने के रूप में वर्णित किया जा सकता है,** जो प्राकृतिक ईंधन का उपभोग करता है और पर्यावरणीय स्थितियों (जैसे, हवा, स्थलाकृति) के आधार पर विस्तारित होता है।
- जंगल में लगी आग को जलाने के लिये **ईंधन, ऑक्सीजन** और **ऊष्मा स्रोत जैसे तीन आवश्यक तत्त्वों की आवश्यकता होती है।**

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/effective-control-of-forest-fire-in-uttarakhand